विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण दिनांक 2 जून 2020

वर्ग अष्टम

राजेश कुमार पाण्डेय

स्वर- वे वर्ण जिनका उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना हो, अर्थात स्वतंत्र रूप से होता है, उस ईश्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं।

(1) ह्रस्व स्वर- जिसका उच्चारण करने में एक मात्रा का समय लगे उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं।जैसे अ,इ,उ,ऋ और ऌ । यह 5 ह्रस्व स्वर कहलाते हैं।
(2) दीर्घ स्वर- जिसका उच्चारण करने में दो मात्रा का समय लगता है वह दीर्घ स्वर कहलाता है।आ,ई,ऊ तथा ॄ ये चार दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
(3) प्लुत स्वर- जींद स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।

स्वरों की मात्राएं-

स्वर जब व्यंजन के साथ जुड़ते हैं तब उनका रूप बदल जाता है स्वरों के इस परिवर्तित रूप या चिन्हों को स्वर की मात्रा कहते हैं

अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ॠ,ऌ,ए,ऐ,ओ,औ। इनकी संख्या तेरह है।

व्यञजन- जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों को दिखाने के लिए उनके नीचे हलंत तिरछी रेखा लगा दिया जाता है।

व्यंजनों के तीन भेद होते हैं।

(1) स्पर्श- जिन व्यंजनों के उच्चारण करते समय जी जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को अस्पष्ट स्पर्श करती है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं क् से लेकर म् तक सभी व्यंजन स्पर्श व्यंजन है। इनकी संख्या 25 है।

(2) अन्तःस्थ- जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ उनके उच्चारण स्थान का थोड़ा सा ही स्पर्श करती है। उन्हें अन्तःस्थ कहते हैं। यह स्वर और व्यंजन के बीच के वर्ण हैं अंतस्थ की संख्या 4 है य् र् ल् व् ।

(3)ऊष्म- इन वर्णों के उच्चारण में वायु गर्म होकर मुख से बाहर निकलती है। उनकी संख्या चार है।– श्,ष्,स्,ह्

अयोगवाह- यह वर्ण अकेले नहीं रहते बल्कि स्वरों या उनकी मात्राओं के बाद लगकर भाषा में प्रयुक्त होते हैं अनुस्वार और:: अयोगवाह हैं यह अधूरे वर्ण होते हैं।